13/8/21

विषय - हिन्दी रचना
B.A. + B.Sc. Part I
कविता - गंगा स्तुति
विद्यापति

डॉ० अनुपमा कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज
जहानाबाद

गंगा स्तुति

बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे,
छोड़इते निकट नयन बह नीरे।
करजोरि बिनमओं बिमल तरंगे,
पुन दरसन होए पुनमति गंगे।
एक अपराध छेमब मोर जानी,
परसल माय पाय तुअ पानी।
कि करब जप-तप जोग धेआने,
जनम कृतारथ एकहि सनाने।
भनइ विद्यापति समदओं तोही,
अन्तकाल जनु बिसरह मोही।

सप्रसंग व्याख्या → प्रस्तुत पंक्तियों में विद्यापति ने गंगा की महिमा तथा उसके सौन्दर्य का वर्णन किया है। प्रस्तुत पद में विद्यापति पाप नाश करने वाली गंगा की महिमा और उसकी गुणवत्ता को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि - तुम्हारे किनारे रहकर मैंने बहुत सुख प्राप्त किया। जितने दिनों तक मैं आपके किनारे पर रहा उतने दिनों में स्वर्ग के समान मैं सुख भोग रहा। आज जब मैं आपके किनारे को छोड़कर दूर जा रहा हूँ तो मुझे काफी दुख का अनुभव हो रहा है। दुख का अनुभव होने के कारण मेरे नेत्रों से लगातार अश्रुधार बह रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे माते गंगा! आपको हाथ जोड़कर मैं विनती करता हूँ कि एक बार पुनः हमें आपके मिलन का सौभाग्य अवश्य प्राप्त हो। एक बार मैं फिर आपसे मिलकर अपने जीवन को धन्य करना चाहता हूँ।

क्रमशः -